International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

स्वातंत्र्योत्तर पृष्ठभूमि में मानवीय अस्मिता और भू-राजनीति(रेणु के उपन्यास ' मैला आंचल' तथा ' परती परिकथा' के विशेष संदर्भ में।)

Manika Panda

Lect.in Hindi, Priyadarshini mahila Mahavidyalaya, Jalda, Rourkela, PhD scholar (Hindi), Ramadevi women's university, Bhubaneswar

शोध सार:

प्रस्तुत शोधपत्र में फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास का वैचारिक परिप्रेक्ष्य स्वतंत्रता के पृष्ठभूमि में एक दृष्टिकोण देने का प्रयास है। जिस प्रकार हम सभी जानते हैं कि रेणु का लेखन शैली कुछ हद तक प्रेमचंद व शरदचंद्र से प्रभावित था ही परंतु वह परवर्ती पर्याय में कैसे गांधी और नेहरू के भावबोध को स्पष्ट करते हुए दिखाई देती है तथा मानवीय कल्पना में जो छवि अंकित किया गया था उसकी टूटन व अस्मिताओं का भार कैसे साधारण जनता को उठना पड़ता है ,और स्वतंत्र भारत में पराधीन विचारधारा का आधार बनाता हुआ विचार ग्रामीण यथार्थ की ओर उपन्यास साहित्य को मोड़ता है।यह यथार्थ के आयाम ही मैलाआंचल को राष्ट्र का रूपक बना देता है तथा परती परिकथा में स्वतंत्रोत्यर नवोन्मेष चेतना से बहुजनो को स्वतंत्र अर्थ का आभास देता हुआ दिखाई देता है । परिकथा का फलक बहुत व्यापक है। कथाकार बंध्या जमीन की भौगोलिक वर्णन से लेकर दंतकथाओं के उद्धरण द्वारा गांव की परिवेश और भूमि के वास्तविक हकदार का अन्वेषण किए हैं ।

मूल आलेख:

रेणु का आविर्भाव भारतीय उपन्यास के धरातल पर उस समय हुआ था जब आम जनमानस की टूटे हुए अनगिनत सपनों पर कुठाराघात करता हुआ यथार्थवादी उपन्यास का जन्म हो रहा था। अतः जहां जैनेंद्र, यशपाल तथा अमृतलाल नागर जैसे उपन्यासकार उन सब विदूपताओ की अन्वेषण करते दिखाई पड़ते थे वहीं फणीश्वर नाथ रेणु का स्वभाव कुछ प्रेमचंद व शरदचंद्र से प्रभावित दिखाई देने लगी थी ।आदर्श की धरातल को जब अपने जनमानस में वशीभूत करके प्रेमचंद यथार्थ की भावभूमि को स्वीकार उसी परिपाटी को रेणु अपने उत्तरदायित्व निभाने के लिए एक नई कथा भूमि को उभारा। प्रेमचंद के कथाक्षेत्र में जो भाषा, शिल्प और रूप की बात होती थी वह कथा भूमि को रेनू ने स्वयं एक और रंग से रंगीत करते हैं। यह विषय है स्वतंत्रोत्योर के पृष्ठभूमि पर जो आज केवल किसान ,जमींदार ,ग्रामवासी या साधारण जनता के विडम्बनाएं नहीं बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की सांस्कृतिक मूल्यों का समाजवादी आदर्श और बदलते हुए ग्राम व्यवस्था से अपनी टूटी हुई मानवीय संवेदनाओं का जीता जागता मानचित्र है।जिसको हम आदर्श एवं यथार्थ भाव भूमि का संक्रांतिकाल नाम से भी परिभाषित कर सकते हैं यह एक ऐसी बिखरती हुई विडम्बनाएं है जिसको साधारण जनता स्वीकारने में विवश हो रहा था, इस दौर में एक ऐसी परती को रेनू ने जन्म दिया जो अपनी

परिकथा सुनाने के लिए हर एक पात्र अपनी अनुभव संपदा में सबसे अधिक उर्वरा थी। क्योंकि इससे पहले किसी भी कथाकार के कलम में इतनी सामर्थ्य नहीं थी जिस यथार्थ को रेनू ने स्वीकारा था।

हिन्दी साहित्य में आंचलिकता शब्द का प्रथम प्रयोग 1954ई. में 'मैला आँचल' के प्रकाशन से प्रारम्भ होती है, जबकि इससे पहले 1953 ई. में क्षेत्रीय पत्रिका में मैला आँचल उपन्यास के कुछ अंश प्रकाशित होने के बाद प्रारम्भ हो गई थी। 'आंचलिक' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग भी संभवत: 'रेणु' ने ही किया। मैला आँचल उपन्यास के संदर्भ में रेणु कहते है - "यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास। कथांचल है-'पूर्णिया'। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला। .... मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर इस किताब का कथा क्षेत्र बनाया है।" मैला आँचल' का प्रकाशन हिंदी गद्य में एक परिघटना थी। कथा सम्राट प्रेमचंद की गोदान के प्रभाव के बाद पहली बार किसी उपन्यास को इस तरह की चतुर्दिकी प्रसिद्धि मिली। रेणु जी के समस्त कथा क्षेत्र उनके जीवन के भोगे हुए यथार्थ का सजीव चित्रण करने वाले प्रेमचंद की परंपरा के साहित्यकार सीढ़ी तैयार करते है। 'रेणु' प्रेमचंद के पश्चात भारतीय ग्रामीण जीवन को उसकी समग्रता में चित्रित करने वाले सशक्त उपन्यासकार के रूप में जितना महत्व आज के सौ साल पहले रखते थे आज भी उतनी ही प्रासंगिकता के पुजारी है।(1)

आंचलिक उपन्यास के महत्त्व को परिभाषित करते हुए प्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामदरश मिश्र कहते हैं, "जैसे नई कविता ने सच्चाई से भोगे हुए अनुभव की भट्टी में तपे हुए पलों को व्यंजित करने में ही कविता की सुन्दरता देखी, वैसे ही उपन्यासों के क्षेत्र में आंचलिक उपन्यासों ने अनुभवहीन सामान्य या विराट के पीछे न दौडकर अनुभव की सीमा में आनेवाले अंचल विशेष को उपन्यास का क्षेत्र बनाया। आंचलिक उपन्यासकार जनपद-विशेष के बीच जीया होता है या कम से कम समीपी दृष्टा होता है। यह विश्वास के साथ वहाँ के पात्रों, वहाँ की समस्याओं, वहाँ के संबंधों, वहाँ के प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश के समग्र रूपों, परंपराओं और प्रगति को अंकित कर सकता है, क्योंकि उसने उसे अनुभूति में उतारा है। आंचलिक उपन्यास लिखना मानों ह्रदय में किसी प्रदेश की कसमसाती हुई जीवन अनुभूति को वाणी देने का अनिवार्य प्रयास है। आंचलिक कथाकार को युग के जटिल जीवन बोध का नहीं, इसीलिए वह आज भी पिछड़े हुए जनपदों के सरल, निश्छल जीवन की ओर भागने में सुगमता अनुभव करता है, ऐसा कहना असत्य होगा।"रामदारस मिश्र:हिंदी उपन्यास:एक अंतर्यात्रा(2)

रेणु के कई उपन्यास, मुख्यत: 'मैला आँचल' व 'परती परिकथा' का फलक बहुत व्यापक है। इनमें ग्रामीण अंचल की विभिन्न संस्कृति, रीति-परंपरा, लोकाचार, किस्सा, लोक-संस्कृति , सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य आदि का उल्लेख है। इस कथा साहित्य में गांव की सोंधी मिट्टी की सुगंध, लोकभाषा, लोकगीत, लोकपर्व, लोक संस्कृति व लोकाचार आदि के विविध तत्त्व परिलक्षित होते है। रेणु द्वारा रचित उपन्यास, 'परती परिकथा' ऐसे ही कई आख्यानों, किस्सों, किवंदितयों, ग्राम्य जीवन के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक रंगों को और लोकाचारों को समेटे हुए है। 'परती परिकथा' अर्थात परती के आवरण अथवा परिवेश की कथा जो बिहार के कोशी अंचल के सम्पूर्ण ताने-बाने को उकेरती है। कथा शिल्पी रेणु ने उपन्यास के माध्यम से कोशी अंचल में घटित मानवीय क्रिया-कलापों, भू-संघर्ष, भू-राजनीति, तात्कालीन सामाजिक-राजनैतिक विचारधारा, रोजमर्रा की जिंदगी, सामाजिक-राजनीतिक गतिविधि एवं संस्कृति, आर्थिक, जातीय-भेद भाव, तात्कालिक ग्राम्य स्त्रियों का यथार्थ यथा अधिकार, चेतना आदि के साथ ग्राम्य इलाकों में प्रचलित किंवदंतियों अथवा जादुई किस्सों का भी चित्रण किया है। 'परती परिकथा' उपन्यास के प्रारंभ में परती अथवा बंध्या धरती के भौगोलिक स्वरुप का वर्णन आरंभ होता है और फिर मिथकीय आख्यानों के उद्धरण एवं जादू-टोनों, सिद्धों, देव-दानवों के रोचक वृतांत, जो कोशी अंचल की दन्त कथाओं में प्रचलित है। ऐसा प्रतीत होता है, उपन्यासकार स्वयं इन कथाओं के

तह में जाकर कोशी अंचल की धरती के बंध्या अर्थात परती, होने के कारणों का अन्वेषण कर रहा हो। उपन्यासकार ने अंचल के ऐसे ही कथानक का चयन किया है जिसके माध्यम से सम्पूर्ण कोशी अंचल के यथार्थ का चित्र एक बड़े कैनवास पर उकेर सके। "धरती नहीं, धरती की लाश जिस पर कफ़न की तरह फैली हुई है बालचरों की पंक्तियाँ। उत्तर नेपाल से शुरू होकर, दक्षिण गंगा तट तक, पूर्णिया जिले को असम भागों में विभक्त करता हुआ -फैला-फैला यह विशाल भू-भाग।" (3)

परती परिकथा' को एक आदर्शवादी उपन्यासकार कहकर कुछ समीक्षकों ने उसका महत्त्व कम करने का प्रयास जरूर की, लेकिन निश्चय ही इसमें 'मैला आँचल' से आगे की कथा है ।जब पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी पंचवर्षीय योजनाओं को लागू करने में मशगूल थे। नेहरू तब एक स्वप्नदर्शी नेता थे और हर आदमी कोई न कोई स्वप्न देख रहा था। यह वह दौर था जब भारत-चीन युद्ध नहीं हुआ था और नेहरू से मोहभंग का दौर भी शुरू नहीं हुआ था। यह उपन्यास का कथानक पूर्णिया जिले का सबसे समृद्ध गांव 'परानपुर' है जो पूरे प्रदेश में प्रसिद्ध है। यहाँ 1500 से 1000 बीघे जोत वाले काश्तकार है और 500 बीघे जोत वाले मध्यम श्रेणी के किसान है। कुछ निम्न श्रेणी के भी किसान है जिनके पास जोत की बहुत कम जमीन है। भूमिहीनों और मजदूरों की संख्या बहुत अधिक है। सवर्णों और बहुजनों के मध्य भू-वितरण का दर बेहद असमान है तात्पर्य यह है गांव की अधिकांश जमीन पर सवर्णों का कब्ज़ा है जो इलाके में होने वाले भू-संघर्ष का मूल कारण है। बड़े और छोटे किसानों में काबिज़ जमीन एवं फसल कटाई के समय अनाज और खलिहानों पर दावा ठोकने को ले कर अनेक संघर्ष हुए है। "भूमिहीनों की विशाल ज़मात! जगती हुई चेतना !... जमींदारी उन्मूलन के बाद भी हर साल फसल कटने के समय एक-डेढ़ सौ लड़ाई-दंगे और चालीस-पचास क़त्ल होते रहे तो फिर से जमीन की बंदोबस्ती की व्यवस्था की गयी।"(4)

गाँव में कई पढ़े-लिखे और राजनैतिक चेतना सम्पन्न लोग रहते हैं फिर भी जमींदारी-उन्मूलन के बावजूद जमीदारों के पास सैकड़ों-हजारों एकड़ जमीन है। गाँव का जमींदार बहुत घाघ और दबंग है, लेकिन उसका पुत्र पढ़ा लिखा और नेहरू के विकास के आश्वासन में विश्वास रखने वाला है। वह गाँव वालों को समझाता है कि 'कोसी विकास परियोजना' के कारण गाँव नहीं डूबेगा और इस परियोजना से गाँव को लाभ होगा और हजारों एकड़ की परती जमीन हरी-भरी हो जाएगी। कथाकार आलोचक विजयमोहन सिंह ने लिखा है कि रेणु एक सीधी सरल कहानी को अपनी चित्रण की कुशलता से संगीतात्मक सरीखा बना देते हैं। मोहाविष्ट करने की कला ही परती परिकथा की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके गद्य में चिड़ियों के बोलने की आवाज सुनने का सा अनुभव होता है। प्रकृति और परिवेश जैसे सचमुच जीता-जागता हो। ऐसा लगता है जैसे कलम कैमरे में तब्दील हो गई हो और शब्दों ने परिदृश्य को फिर से एक फिल्म की तरह जीवित कर डाला हो।

इसी पर निर्मल वर्मा ने लिखा है: "ऐसा लगता है कि हम किसी गाँव का अद्भुत कार्निवाल देख आए हैं। अनेकानेक रंगों, गन्धों, सुरों की हहराती धारा हमारे बीच बहकर आगे बढ़ गई है। अनेकानेक व्यक्तियों की असंगतियों, सुख-दुख, हास-विलास से हमने अपने को सम्पृक्त कर लिया है। किन्तु ये चेतना, रंग और सुर अपने में महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण है इस कार्निवाल की गतिमयता, अविरल प्रवाह की कलकल, हवा में उड़ते रंगों की माया, एक मायावी लय जो सब व्यक्तियों और घटनाओं के बीच से गुजरती हुई हमारे मस्तिष्क और हृदय को आलोड़ित कर देती है।" रेणु ने और भी उपन्यास लिखे हैं लेकिन इसमें 'जुलूस' ही ज्यादा उल्लेखनीय है। विजयमोहन सिंह ने रेणु के इन्हीं उपन्यासों में हास्यबोध का भी विशेष रूप से उल्लेख किया है, जो उनसे पहले जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल आदि में प्रायः दिखाई नहीं देता और प्रेमचन्द के यहाँ भी नाममात्र को ही है। बहुत आगे चलकर यह श्रीलाल शुक्ल के 'राग

दरबारी' में प्रखर रूप से दिखलाई पड़ता है या फिर हरिशंकर परसाई की रचनाओं में।(अन्तर्यात्रा: निर्मल वर्मा, सम्पादक-नन्दकिशोर आचार्य में शामिल 'उपन्यास की परती परिकथा' शीर्षक निर्मल वर्मा के एक समीक्षात्मक लेख का अंश)।(5)- निर्मल वर्मा

आज़ादी से पूर्व के राजे-रजवाड़े अथवा बड़े जमींदार और इस्टेट (अकूत सम्पदा वाले परिवार) जो आज़ादी के बाद ज़मींदारी प्रथा के उन्मूलन से अपने सम्पति को सरकार की नज़रों से बचाने के लिए और सम्पति पर एकाधिकार कब्जा रखने के लिए राजनीति में शरण लेते है। तात्कालीन राजनैतिक परिदृश्य में कांग्रेस के प्रभाव को देखते हुए अधिकांश भू-स्वामित्व, बड़े जोत वाले प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कांग्रेस से जुड़ते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात जमींदारी प्रथा के उन्मूलन से पिछड़ों एवं बहुजनों के मन में स्वराज्य को लेकर एक कोरी कल्पना विकसित होती है और उन्हें लगता है सरकार उनकी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वर्णिम विकास योजनाओं की शुरुआत करेगी, हालाँकि नये सरकार भी आंशिक रूप से इसका प्रयास करती है। लेकिन सरकारी योजनाओं का गांव तक पहुंचना एक स्वप्न बन कर रह जाता है क्योंकि कुछ उच्च वर्ग के अधिकांश जन, सरकार के चमचे जो अप्रत्यक्ष रूप से जमींदारी और सामाजिक विषमता के वाहक थे। फलस्वरूप उच्च वर्ग और पिछड़ों दलितों के बीच असमानता बढ़ जाती है और स्वातंत्र्योत्तर पूर्व स्वराज्य की कल्पना स्वातंत्र्योत्तर यथार्थ से टकरा कर चूर-चूर हो जाती है। इस्टेट और भू स्वामित्वों द्वारा जमीन पर मालिकाना हक़ और वर्चस्व को कायम रखने के लिए अकुल होती जनताओं की किलकारियां बढ़ती है जो समाज में हो रहे भू-संघर्ष से वर्ग-संघर्ष में परिणत हो उठता है। ग्राम्य अंचल के अप्रतिम कथाकार, 'परती-परिकथा' के केंद्र में इसी भू-राजनीति का विस्तृत फलक पर कई चित्रण देखने को मिलता है।

कथा के मुख्य पात्र जितेंद्र मिश्र को अपने पुश्तैनी सम्पति और ऊसर परती धरती पर अपने अधिकार जमाए रखने के लिए अपने सगे संबंधियों और गांव के बहुजनों के साथ संघर्ष करना पड़ता है। कथा का अन्य पात्र लुतो स्वातंत्र्योत्तर भारत के मध्यवर्गीय जातियों के बीच उपजी चेतना का प्रतीक है। वह सवर्णों से हर स्तर पर लोहा लेता है, गांव के पिछड़ों को एकजुट करता है तथा भू-स्वामियों के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ता है। साम, दाम, दंड, भेद की नीति को अपने हथियार के रूप में इस्तेमाल करने वाले उच्च जाति पर उनके हथियार का ही इस्तेमाल करता है। "लुतो आगे बढ़ आया। उत्तेजित हो कर बोला- "आपने क्या समझ लिया है, गरीबों को कोई माय-बाप नहीं है।" तुम कौन हो "..... मैं-मैं कौन हूँ ? वाह रे ! आप इतना भी नहीं जानते। मैं जनता का लीडर हूँ।" ..... कलमबाग भी हमारा है"... हमारा है, हमारा है" सम्मिलित आवाज़ें।.... जितन बाबू ने बाग़ के माली को पुकारा, शिवसरन। "हम यहाँ है। " भीड़ के बीच शिवसरन ने जवाब दिया। अरे? जितन बाबू ने हँस कर कहा, जनता में तुम भी हो।" "अचरज कहे लगता है आपको? हां, हां, है जनता में, सभी गरीब जनता के साथ है।" लुतो ने कहा, "और जनता तुम्हरे साथ।"-जितन ने कहा।"

जमींदारी उन्मूलन से भू-स्वामित्वों और इस्टेट के आय के स्रोत में कमी आयी लेकिन शानो-शौकत में कोई कमी नहीं। एक तरफ अधिकार और आय सीमित होने और दूसरी तरफ बहुजनों को समानता का अधिकार मिलने से उनके मन में बहुजनों के प्रति वैमनस्य की भावना भी प्रस्फुटित हुई। "यहाँ जमींदारी ख़त्म हो गयी लेकिन जमींदारी शान बढ़ती जा रही है। दो सौ बीघे धान और डेढ़ सौ बीघे पाट की खेती करने वाला हवाई जहाज से सफर करेगा, महीने में पांच सौ रूपए की किताब, तस्वीर और मँगावेगा ! दान करेगा ! बाग लगायेगा !" (6)

जोत की भूमि का असामान्य वितरण और बहुजनों का अपने अधिकार के प्रति जागरूक होना भू-राजनीति अथवा भू-संघर्ष के प्रमुख कारण थे। कमजोर और छोटे किसान अगर भू पर दावे को लेकर आवाज़ बुलंद करते तो उन्हें इसका खामियाज़ा भुगतना

पड़ता। जुल्म और यातना का दौर शुरू हो जाता। सामंती विचार वाले अधिकांश जमींदारों और इस्टेट ने अपने खिलाफ प्रतिरोध का स्वर बुलंद करने वाले किसानों पर जुल्म ढाते, फसलों को रातों-रात चौपट करा देते, उनके मवेशियों की चोरी करवाते या घरों में आग तक लगवा देते। "संतोखी सिंह की बीस बीघे की खेती, एक ही रात में शेष हो गयी। कैयट टोली से सात बैल और तीन भैंसे चोरी हो गयी। फ़टकन के दोनों बैल छटपटा कर मर गए। जिद्दा, और भी बहुत कुछ करने की धुन में लगे है मुंशी जी।(7)

सामंती विचार वाले बड़े काश्तकारों और भू- स्वामियों द्वारा फसलों को तबाह करना, झूठे मुक़दमे में फ़साना, चोरी का इलज़ाम लगाना इत्यादि बातें अंचल में बहुत सामान्य बातें थी। भूमिहीनों और मजदूरों की हालत अत्यंत दयनीय थी दलित स्त्रियों के दैहिक शोषण तक हुए। अपने हक़ के लिए आवाज़ बुलंद करने वालों को नेस्तानाबूत करने के लिए ये किसी भी हद तक जा सकते थे। यहाँ तक की जैविक हमलों के द्वारा किसी खास जाति अथवा समुदाय को पूर्णत: नष्ट करने के भी हिमायती रहे है। "बायोलॉजिकल वारफेयर का मतलब समझते है मुंशी जी? "जी नहीं! फिर कोई नया कानून बना है क्या?" कीटाणु-युद्ध! रोगों के कीड़े बरसाकर दुश्मनों को बर्बाद किया जाता है, आजकल ! सब कुछ माफ़ है, इस युग में।(8)

निष्कर्ष:

गांव में हुए संघर्ष और उच्च तथा सामान्य वर्गों के बीच में हुए आनाकानी का मूल प्रतिपाद्य था असमय भू-वितरण।और इसी संघर्ष के बीच भूमिहीन,तथा छोटे किसान हो या मजदूर ,जिन्होंने अपनी जमीन में अधिकार की मांग रखी जिसके फल स्वरूप फसल कटाई से पहले व्यापक दंग और नर संहार हुए ।ठीक उसी प्रकार भूमि पर अपना दावा कायम रखने के लिए इस्टेट, बड़े काश्तकार, नम्बरदार, भू-स्वामी, साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाकर साधारण जनता को त्रास देना आरम्भ करते हैं, लेकिन स्वातंत्र्योत्तर नवोन्मेष चेतना और अधिकार प्राप्त होने से उनके दांव पलट जाते है और बहुजन एकजुटता से अपनी खोयी अस्मिता को हासिल करते है। जिसका यथार्थ रूप हम विशेष कर रेणु के मैला आंचल तथा परती परिकथा जैसे प्रमुख उपन्यास के कथा भूमि से प्राप्त करते है।

संदर्भ:

1. फणीश्वरनाथ रेणु: मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021, भूमिका
2. रामदरश मिश्र हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968, पृ.153
3. परिकथा (रेणु रचनावली 2, सं. भारत यायावर), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 311
4. वही, पृ. 326
5. सम्पादक-नन्दकिशोर आचार्य:अन्तर्यात्रा: निर्मल वर्मा
6. परिकथा (रेणु रचनावली 2, सं. भारत यायावर), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 526
7. वही, पृ. 489
8. वही, पृ. 490